(टैलिन के गलियारों में..)

मैं तो जी चूका अपनी बड़ी जिन्दगी,
बस तुझे देखना है, जीते हुए बड़ी जिन्दगी,
मेरी चिन्ता तू अभी तो न कर, मेरे दोस्त,
बारिश के चोटों से अभी तुझे बचाना है।

ये बुँदे लगती तो बड़े जोर से है,
चमड़ी भी तो मोटी हुई मेरी ही है,
तूने तो अभी कुछ ही सावन देखे है,
असाढ़ का क्या, भादो भी तो बाकी ही है।

रंज ना कर तू, मेरे भींगने पर,
बूँदों की आड़े-तिरछे चोटों पर,
हो सके तो, अगली बार आ ही जाना,
जब मैं भींगू, तू मुझे बचा लेना।